MAA OMWATI DEGREECOLLEGE,

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

M.A(History) 2nd Semester,

(Medieval Societies) Paper-2

M.A (HIStory) 2 Semester, PAPER-2
(Medieval Societies)
Important questions
Unit-I

Q1. इस्लाम के उदय की सामाजिक राजनीतिक पृष्ठभूमि की चर्चा कीजिए।

Ans!- प्रस्तावना :-

अरब एशिया महाद्वीप के दक्षिण - पश्चिम भाग मे स्थित है संसार भर मे इतना बड़ा कोई दूसरा द्वीप नही है उसके उत्तर मे स्याम का रेगिस्तान, पूर्व मे फारस की खाड़ी, दक्षिण मे हिन्द सागर और पश्चिम मे लाल सागर है। इस प्रकार द्वीपों से घिरा हुआ यह प्रदेश एक महान द्वीप है जिसे 'जजीरातुल अरब' के नाम से याद किया जाता है यह अनेक सभ्यताओ धर्म एवं जातियों की उद्गम भूमि रहा है 2400 x 2080 कि. मी क्षेत्र का यह प्रायद्वीप कुछ तटवर्ती

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

कुछ तटवर्ती इलाकों को छोड़कर लगभग सारा रेगिस्तान है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है और हवा (लू) (heat wave) या Sunstroke) इतनी गर्म चलती है कि इसका नाम ही जहरीली हवा रख दिया गया है थोड़े समुद्रतटीय व ओयासिस व ओयासिस क्षेत्र में कुछ बारिश व खेती होती है खनिज तेल ही यहां की प्रमुख सम्पदा है। इस देश में सेमेटिक जातियों समय-समय पर अपने पड़ोसी देशों में नवीन सभ्यताओं का विकास करती रही इन्होंने मेसोपोटामिया में एक उच्च कोटि की सभ्यता को जन्म दिया।

Page :
Date :

(i) अरब का विभाजन :— किसी भी देश के लोगों का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और नैतिक जीवन वहाँ की भौगोलिक दशा से बहुत अधिक प्रभावित होता है और अरबवासी भी इससे वंचित नहीं रह सके

(i) जातीय संगठन :— अरबों के सामाजिक संगठन का आधार जाति या वंश था। हर खेमा एक परिवार समझा जाता था कई परिवारों से मिलकर एक जाति बनती थी।

(2) रीति-रिवाज :— उनके रीति-रिवाज भी अनोखे थे। रास्ता भूल

पाने पर वे कपड़ा को उतार कर उल्टे पहन लेते थे ताकि रास्ता याद आ पाये यात्रा प्रारम्भ करते हुए पीछे पलट दिये जाते थे

(3) वस्त्र तथा भोजन आदि :—

साधारणतया अरब के लोगों का पहनावा बहुत ही सादा रहा है गाढ़े के कुर्ते में जोड़ लगाकर पहनाना उनके लिए एक साधारण सी बात थी वे ढीले-ढाले और लम्बे कुर्ते पहनते थे।

(1) राजनीतिक दशा :—

राजनीतिक दृष्टि से भी प्राक् इस्लामी काल

के अरबवासी कबीलों में संगठित थे। अरबों में 'असाबियत' की भावना जिसे हम सगोत्रता या जातीय या रक्त-एकता कह सकते हैं बहुत अधिक पाई जाती थी। हिट्टी ने लिखा है कि असाबियत वास्तव में किसी कबीले की आत्मा है। उसके फलस्वरूप किसी व्यक्ति में कबीले के प्रति वफादारी की भावना उत्पन्न होती थी।

धार्मिक दशा :—

इस्लाम के उदय के पूर्व अरबवासियों का कोई ऐसा खास व निश्चित धर्म नहीं था जिसने उनके जीवन को विशेष रूप से प्रभावित किया हो

(1) धर्म की अनिश्चितता :—
इस्लाम के पूर्व अरबों का कोई निश्चित धर्म नहीं था।

(2) मूर्ति पूजा :—
इस्लाम से पूर्व अरब में हर स्थान पर मूर्ति-पूजा होती थी।

(3) सूर्य तथा चन्द्रमा की पूजा :—
अरब के लोग चाँद और सूर्य पर भी बहुत विश्वास रखते थे।

(4) नक्षत्र पूजा :—
अरब इस्लाम में नक्षत्र पूजा का भी बहुत प्रचलन था।

(b) हजरत मुहम्मद की शिक्षाओं के तत्कालीन समाज पर प्रभाव का वर्णन कीजिए।

Ans:- प्रस्तावना :—
प्राचीन विश्व सभ्यता के इतिहास का यदि अध्ययन किया जाये तो विदित होगा कि तत्कालीन युग में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जिनका महत्व सभ्यता के साथ समाप्त हो गया जैसे कि धर्म और राजनीतिक व्यवस्था का उदाहरण हमारे समक्ष है प्रत्येक सभ्यता की अपनी अलग राजनीतिक व्यवस्था थी और उन सबका धर्म के सम्बन्ध में अलग-अलग विश्वास था जो उन सभ्यता के साथ ही समाप्त हो गये जिसमें ईरानी सभ्यता थी।

Page :
Date :

पूर्व-इस्लाम अरब :-

पूर्व-इस्लाम अरब राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से बर्बर एवं असभ्य था। सम्पूर्ण अरबवासी छोटे-छोटे वंशो में विभक्त थे प्रत्येक वंश का एक मुखिया होता था जो अपनी शक्ति के बल पर शासन करता था।

हजरत मुहम्मद साहब का जीवन :-

ऐसे हालात में 570 ई. में अरब में मक्का में हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ उनके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का बीबी अमीना था उनके जन्म के कुछ दिनों पूर्व ही उनके पिता का देहान्त हो गया

Page :
Date :

मुहम्मद साहब की शिक्षाएँ या उपदेश या इस्लाम के सिद्धान्त :-

मुहम्मद साहब की शिक्षाएँ या उपदेश या इस्लाम के सिद्धान्त (कुरान) और हदीस में संकलित है।

कुरान की शिक्षाएँ या सिद्धान्त :-

कहा जाता है कि कुरान वेदों की तरह अल्लाह की एक महान कृति है और इसे अर्श से हजरत मुहम्मद पर नाजिल किया गया है।

ईमान :-

इसमे अल्लाह, फरिश्ते, पैगम्बर और निर्णय दिवस का समावेश है।

(२) इबादत :—
इबादत एक प्रकार से नैतिक कर्तव्य में शुमार है इसके 5 भाग है जो कि इस्लाम के 5 स्तम्भ कहे जाते है
शहादा, सलाह, जकात, रोजा व हज्ज।

(ii) इस्लाम का स्वरूप :—
इस्लाम का अर्थ होता है — ईश्वर के हाथो आत्मसमर्पण कर देना इस्लाम एक सीधा साधा धर्म है इसके सिद्धान्त जटिल नही है इसकी शिक्षाएँ लोगो की शीघ्र ही समझ मे आ जाती है अन्य धर्मों की तरह इसमे कर्मकाण्डो की जटिलता नही है इस धर्म मे पुरोहितो की भी आवश्यकता नही यह ईश्वर के एकत्व मे विश्वास करता है।

(iii) मुहम्मद साहब का तत्कालीन समाज पर प्रभाव :—

(i) राजनीतिक क्षेत्र (ii) सामाजिक क्षेत्र
(iii) आर्थिक क्षेत्र (iv) सांस्कृतिक क्षेत्र
(v) धार्मिक क्षेत्र

सारांश मे, मुहम्मद साहब का जन्म एक क्रान्तिकारी घटना थी उनकी शिक्षाओं ने अरबवासियों के राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन मे कई क्रान्तिकारी परिवर्तन किये।

Q→3 खलीफाओ के काल मे इस्लामी प्रशासनिक ढांचे का वर्णन कीजिए।

Ans'- जब तक हजरत मुहम्मद जीवित रहे वे पैगम्बर, कानुन निर्माता, धर्मगुरु, प्रधान न्यायाधीश सेनापति और राज्याध्यक्ष के सभी कार्यो का निर्वाह करते रहे। परंतु उनके देहावसान के बाद मुसलमानो सम्मुख उनके उत्तराधीकारी की गंभीर समस्या उठ खडी हुई आध्यात्मिकता के अलावा अन्य सभी बातो के लिए उनका उत्तराधीकारी कौन बने या किसे बताया जाए। मुहम्मद साहब अपने पीछे अपना कोई पुत्र नही छोड गए थे यद्यपी इन लोगो ने बाद मे इस्लाम को स्वीकार किया था।

अबु बकर :

उत्तराधीकार संघर्ष मे प्रथम विचारधारा वाले दल की विजय हुई। हजरत मुहम्मद के ससुर और इस्लाम की दीक्षा लेने वालो मे अग्रणी बुजुर्ग और धर्मानिष्ठ अबु बकर को एकत्रित सरदारो ने अपने समर्थन प्रदान कर उन्हे मुहम्मद साहब का उत्तराधीकारी नियुक्त किया

(i) अबु बकर की समस्याएं तथा सफलताएं :

(i) मुसलमा कज्जाब और तलैह आदि द्वारा पैगम्बर होने के दावे का अन्त करना।

(ii) विद्रोहियो के विद्रोह को दबाना।

(iii) जकात देने वालो को उसके

लिए तैयार करना।

समाधान :— उपरोक्त चारों समस्याओं का अबू बकर को समाधान करना था। इन समस्याओं के समाधान में एक उत्साही सैनिक खालिद - बिन - वालिद ने खलीफा की मदद की।

(2) प्रशासन :— अबू बकर केवल एक सफल विजेता नहीं अपितु एक कुशल शासक और महान संगठनकर्ता भी था

(i) प्रदेशों का विभाजन (ii) आर्थिक प्रबंध
(iii) सैनिक प्रबन्ध (iv) कर व्यवस्था

मूल्यांकन :— अबू बकर ने इस्लामी राज्य के संगठन में बहुत बड़ा योगदान दिया और उसने शासन का ऐसा ढांचा तैयार किया तथा ऐसा अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया जिसने इस्लामी राज्य के प्रसार में बहुत अधिक सहायता दी

उमर :— खलीफा अबू बकर का उत्तराधिकारी उमर को चुना गया जिसे उमर प्रथम के नाम से जाना गया। वह लम्बे कद तथा एक हृष्ट - पुष्ट शरीर वाला व्यक्ति था।

(1) विजय अभियान :— हजरत मुहम्मद साहब ने साम्राज्य विस्तार का जो स्वप्न

उसको अनुवकर ने साकार रूप देने का प्रयास किया

अली :

खलीफा उसमान की हत्या के फलस्वरूप इस्लाम जगत में काफी विप्लवकारी परिवर्तन किये।

(1.) जमल का युद्ध : जुबैर और तल्हा ने अली के विरुद्ध एक संगठन बनाया जिसमे मुहम्मद साहब की प्रिय पत्नी आयशा ने भी उनका साथ दिया

2.) सिफ्फीन का युद्ध : इराक और हिजाज के अतिरिक्त सीरिया में भी विद्रोह शुरू हो गया था।

Q.4. अब्बासिदा की शक्ति के उत्थान को हम किस हद तक विद्रोह कह सकते है। समीक्षा कीजिए।

Ans. प्रारम्भिक स्थापना :

उमय्यद वंश के समय देश की बहुत उन्नति हुई, परन्तु उत्थान और पतन प्रकृति का शाश्वत नियम है। पर यह उल्लेखनीय है कि जब शासन अपनी उन्नति के उच्चतम शिखर पर था। तभी कुछ ऐसे तथ्यों का सूत्रपात हुआ जिसने उमय्यद वंश के स्थान पर अब्बासी वंश आया वास्तव में उमय्यद खिलाफत के पतन के बीज उसकी स्थापना के साथ ही पड चुके थे।

Page :
Date :

खिलाफत की अवधारणा में परिवर्तन :—

तत्पश्चात खलीफा और खिलाफत की अवधारणा में भी परिवर्तन आ गया। अब खलीफा को न केवल तत्पश्चात खलीफा और खिलाफत की अवधारणा में भी परिवर्तन आ गया।

अब्बासी राजवंश :—

अब्बासी राजवंश ने लगभग 500 वर्ष से अधिक समय तक राज्य किया।

1. महत्तर अब्बासी : अबु-अल-अब्बास उश-शफा :— जैसा कि लिखा जा चुका है कि अबु-अल-अब्बास उश-शफा अब्बासी वंश का संस्थापक था।

Page :
Date :

2. अबु-जफर-अल-मन्सूर :—
अबु-अल-अब्बास के बाद उसका भाई अबु-जफर 'मन्सूर' की उपाधि लेकर गद्दी पर बैठा।

3. अल-महदी :—
अल-महदी ने प्रगतिशील शियाओं के साथ समझौता करने का प्रयास किया।

4. हारूँ अर्रशीद :—
अल-महदी के बाद उसका पुत्र अल-हादी खलीफा बना परन्तु एक वर्ष के बाद उसका स्वर्गवास हो गया।

5. अल-आमीना और अल-मामन :—
अपने जीवनकाल में ही हारूँ अर्रशीद ने अपने साम्राज्य की भावी व्यवस्था कर दी थी।

6. अल-मुतासिम :—

अल-मुतासिम की खिलाफत बाइजेण्टियन साम्राज्य के विरुद्ध पुनः संघर्ष के लिए विख्यात है। अनु-अल-अब्बास से लेकर अल-मुतासिम का काल इस्लामी युग का स्वर्ण काल कहा जाता है।

7. गौण अब्बासी :—

बहुत से इतिहासकार खलीफा अल-वाकिफ के बाद के समय को गौण अब्बासी मानते हैं।

इस प्रकार अनु-अल-अब्बास ने जिस अब्बासी वंश की स्थापना की थी।

Unit-3

Q.5 भारत में प्राचीन से मध्यकालीन समाज के रूपांतरण पर एक लेख लिखिए।

Ans- मध्य युग :—

इतिहास में मध्यकाल का प्रयोग उस युग के लिए किया जाता है जो किसी देश के प्राचीन और आधुनिक काल के बीच में आता है। प्रायः भारतीय इतिहास में 8वीं शताब्दी को मध्यकाल के प्रारम्भ तक 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ को उसका अन्त माना जाता है।

प्राचीन सामाजिक अवस्था में परिवर्तन एवं कारण :—

भारत में सामाजिक परिवर्तनों का सिलसिला परिवर्तनों का सिलसिला पुरा-पाषाण काल से लेकर सातवीं शताब्दी तक जारी

रहा

(1) वर्ण व्यवस्था :- इस प्रथा ने समाज में सबसे पहले ऊँच - नीच की भावना पैदा की। जैसे - जैसे वर्ण व्यवस्था जटिल होती गई, समाज के क्रमानुसार ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को सम्मान प्राप्त होता गया और शूद्रों को समाज में निम्न समझा जाने लगा।

(2) धन का असमान वितरण :- धन की विषमता ने भी सामाजिक विषमता को बढ़ावा दिया। ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर अशिक्षित लोगों से धन लूटा। धनि व्यक्तियों के पास पशु, भूमि, मूल्यवान

वस्तुएं कितनी ज्यादा होती थी

3) भूमि अनुदानों का प्रारम्भ :- प्राचीन भारतीय समाज को मध्यकालीन समाज के रूप में परिवर्तित कर देने के पीछे जो केन्द्रीय कारक है, वह है भूमि अनुदानों की प्रथा। यह प्रथा कैसे शुरू हुई? शासनपात्रों के आधार पर कहा जा सकता है कि दान देने वाले अर्थात राजा - महाराजा इसके माध्यम से धार्मिक लाभ प्राप्त करना चाहते थे। दान प्राप्त करने वाले अर्थात भिक्षु और पुजारी, अपने धार्मिक कर्मकांडों को निभा पाने के लिए धन चाहते थे।
इस प्रथा से एक लाभ यह भी था कि जोत की सीमा में और भी भूमि आ गई।

Scanned with OKEN Scanner

4. अन्तर्जातीय विवाह :— अपनी जाति से बाहर विवाह करने की भावनाओं को हतोत्साहित करने से भी समाज में विषमता या ऊंच - नीच का बढावा मिला इनसे उत्पन्न सन्तानों को वर्ण संकर कहा गया।

5.) काम की महत्ता की अवहेलना :— हमारे देश में पहले तो राजा भी हल चलाते थे लेकिन धीरे - धीरे काम के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल गया। हाथ से काम करने वाले शूद्र और अछूत समझे जाने लगे।

6. सामाजिक कुरीतियां :— प्राचीन भारत के समाज में चली सामाजिक बुराइयों ने भी सामाजिक विषमता को बढावा दिया। स्त्रियों की शिक्षा के महत्व को अस्वीकार करना, कन्या वध सती प्रथा, दहेज प्रथा आदि अनेक प्रथाओं ने समाज में स्त्रियों का स्थान पुरुषों से नीचा कर दिया।

(7.) दोषपूर्ण कानूनी व्यवस्था :— प्राचीन भारत में दीवानी और फौजदारी कानून भी वर्ण - विभाजन पर आधारित हो गए।

Scanned with OKEN Scanner

Q.6. मध्यकालीन यूरोप में चर्च की सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डालिए।

Ans:- मध्ययुग के राजनीतिक चिन्तन का प्रधान विषय चर्च और राज्य के बीच चलने वाला आपसी संघर्ष था। मध्ययुग का आरम्भ होने के पहले से ही यह धारणा प्रचलित थी कि ईश्वर ने मानव समाज के शासन के लिए दो सत्ताओं को नियुक्त किया है पोप और सम्राट। पोप आध्यात्मिक शासन का प्रधान था तो सम्राट लौकिक शासन का यह माना जाता था कि ये दोनों अपनी सत्ता का प्रयोग दैवी तथा प्राकृतिक विधि के अनुसार करते हैं

(i) चर्च व राज्य के बीच संघर्ष :-

चर्च और राजसत्ता के बीच सहयोग के सूत्र समाप्त होकर विरोध प्रारम्भ होने का सबसे मुख्य कारण यही था कि लौकिक और धार्मिक कार्यों के मध्य अन्तर का कोई स्पष्टीकरण नहीं हुआ था।

(ii) राजाधिकारियों द्वारा बिशपों की नियुक्ति

सन् 1073 ई. में ग्रेगरी सप्तम के पोप बनाने के साथ ही चर्च एवं राजसत्ता के महान विवाद का प्रारम्भ हो गया।

2). ग्रेगरी सप्तम और सम्राट हेनरी चतुर्थ का संघर्ष - सन्बाइन :-

ग्रेगरी की दृष्टि में पोप सम्पूर्ण चर्च का प्रभुसत्ताधारी प्रधान था।

Scanned with OKEN Scanner

वह बिशपों को नियुक्त और अपदस्थ कर सकता था। उसका धार्मिक प्रतिनिधि बिशपों तथा चर्च के अन्य अधिकारियों से उच्चतर स्थिति का उपभोग करता था।
प्रमुख घटना यह हुई कि हेनरी पंचम और पास्चल द्वितीय के मध्य इस आधार पर एक समझौता हो गया कि धर्माचार्य अपने समस्त राजनीतिक कार्यों को त्याग दें।

(3) इनोसेंट तृतीय :—
पोप बनते ही इनोसेंट तृतीय ने चर्च को सर्वोच्च सत्तापूर्ण बनाने और राजाओं को चर्च का वशवर्ती करने की दिशा में पुनः प्रभावशाली प्रयत्न करने प्रारम्भ कर दिये। हेनरी पंचम और पास्चल द्वितीय में 1122 ई. में जो समझौता हुआ था।

(4.) फ्रेडरिक द्वितीय और इनोसेंट चतुर्थ :—
इनोसेंट तृतीय के अन्तिम काल से फ्रेडरिक द्वितीय का शासन आरम्भ हुआ। राजा फ्रेडरिक ने दावा किया कि साम्राज्य के शासन सम्बन्धी विषयों में वह पोप से सर्वथा स्वतन्त्र है।

(5) पोप बोनीफेस अष्टम :—
फिलिप चतुर्थ अथवा फिलिप दी फेयर ने दृढ़ता से पोपशाही की शक्ति पर निर्णायक आघात किये। फिलिप चतुर्थ अत अथवा फिलिप के समय पोप के पद पर बोनीफेस अष्टम विद्यमान था।

Page :
Date :

(6) पोप जॉन बाईसवाँ :- चर्च और राज्य के विवाद में एक और अन्तिम महत्वपूर्ण संघर्ष हुआ 1314 ई. में बवारिया के लुईस चतुर्थ को पवित्र रोमन सम्राट चुना गया था।

Page :
Date :

Q.7. पश्चिमी यूरोप में सामन्तवाद के उदय के लिए उत्तरदायी कारक क्या थे ?

Ans :- सामन्तवाद, जिसे अंग्रेजी में फ्यूडलिज्म कहा जाता है। मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास की एक प्रमुख विशेषता रही है। क्योंकि उस युग की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थायें इसी समान्तवाद के आधार पर टिकी हुई थी

(i) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

सामन्तन्त्र का जन्म किसी शासक की आज्ञा अथवा कुछ भूमियों के संयुक्त प्रयासों की उपज नहीं था। इसकी उत्पत्ति अपने - आप स्वाभाविक रूप से हुई थी।

Page :
Date :

पाँचवी सदी के आरम्भ में जब रोमन साम्राज्य खण्ड-खण्ड होकर लड़खड़ाने लगा गया तो सम्पूर्ण यूरोप अराजकता एवं अव्यवस्था में डूब गया। रोमन साम्राज्य को पूर्व और उत्तर की दिशाओं में बर्बर लुटेर समुहो ने लूट डाला थे। बर्बर लोग भारत यूरोपीय मूल की भाषाएँ बोलते वाले बहुत से जर्मन कबीले थे जो रोमन साम्राज्य की सीमा से दूर

सामन्तवाद के विकास के कारण :—

सामन्तवाद के विकास के निम्नांकित कारण थे —

(A) राजनीतिक कारण (Political causes)

Page :
Date :

(1) यूरोप में अशान्ति और अराजकता :—

पाँचवी शताब्दी में बर्बर जातियों के आक्रमणों के फलस्वरूप रोमन साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और उसके स्थान पर कई स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हो गई रोमन साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और उसके स्थान पर कई स्वतन्त्र राज्यो की स्थापना हो गई रोमन साम्राज्य के विघटन काल में पश्चिमी यूरोप में अराजकता अशान्ति एवं अव्यवस्था फैल गई।

(2) यूरोपियन शासन व्यवस्था पर प्रभाव :—

रोमन साम्राज्य के पतन का प्रभाव यूरोप की शासन

Page :
Date :

व्यवस्था पर भी पड़ा। रोमन साम्राज्य के विघटन काल में जमींदारों एवं शासकों ने स्थानीय शासन में स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी।

(3) जर्मन जातियों का आगमन :-

रोमन साम्राज्य के बाद जर्मन विजेताओं ने पश्चिमी यूरोप में सामन्ती प्रथा को फैलाया। जर्मन कबीलों के नेता जीती हुई भूमि को अपने अनुयायियों के बीच बाँटने लगे।

(4) धार्मिक संस्थाओं को स्वतन्त्रता मिलना :-

नवीं शताब्दी के मध्य में धार्मिक संस्थाओं को भी शासन

Page :
Date :

के क्षेत्र में पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई। पादरी भी बड़े जमींदार बन गये।

(5) आर्थिक कारण :- रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत बड़े-बड़े जमींदार वर्ग का उदय हुआ जिनके अधीन काफी बड़ी भू-सम्पत्ति रहती थी।

(1) कृषि सम्बन्धी वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार

(2) मजदूरों की संख्या में वृद्धि।

Q.-9. मध्यकालीन यूरोप में कृषकों की दशा का वर्णन कीजिए।

Ans- मध्यकालीन यूरोप की एक मुख्य विशेषता सामंतवादी प्रणाली थी। इसका प्रभाव लगभग सभी क्षेत्रों पर पड़ा था। इस प्रथा का सबसे विशिष्ट अभिलक्षण भूमि ही था। सामंती समाज के विविध पहलुओं को इस प्रकार से समझा जा सकता है।

(1) सामन्ती समाज व आर्थिक जीवन :—

(i) कृषि का विकास :— आरम्भिक मध्ययुग में आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि पर निर्भर था। पश्चिम में रोमन साम्राज्य के राजनीतिक और आर्थिक विघटन के साथ ही बड़ी-बड़ी जागीरों की संख्या और महत्व में काफी वृद्धि हो गई भूमध्यसागर पर मुस्लिम विजय ने यूरोपीय व्यापार वाणिज्य को लगभग मृतप्राय: बना दिया था।

(2) मेनर व्यवस्था :— मध्यकालीन यूरोप समाज में एक-दूसरे पर आश्रित दो व्यवस्थाओं में संगठित था। सामन्ततन्त्र राजनीतिक पहलू से सम्बन्धित था तो मेनर व्यवस्था आर्थिक पहलू से सम्बन्धित थी। इस युग में यूरोप असंख्य फीफ़ों में विभाजित हो चुका था ये फीफ समाज की आधारभूत राजनीतिक इकाईयाँ थी।

Page :
Date :

3.) मैनर की शासन व्यवस्था :

मैनर की शासन व्यवस्था का मुख्य दायित्व मैनर के स्वामी सामन्त का होता था वही मैनर का सर्वोच्च शासनाधिकारी था। वह अपनी सहायता के लिए सामान्यतः तीन तरह के अधिकारी नियुक्त करता था (1) स्टीवर्ड (2) बेलीफ और रीव। स्टीवर्ड सामन्त के बाद सर्वोच्च अधिकारी होता था और वह अपने सामन्त की समस्त मनरों की देखभाल करता है। वह अपने सामन्त का कानूनी सलाहकार होता है।

Page :
Date :

(4) किसानों का जीवन : मैनर के जागीर के किसान दो वर्गों में बटे रहते थे और उन्हें आने-जाने तथा अपनी इच्छानुसार कृषि-कार्य करने की स्वतन्त्रता थी। उन्हें सामन्त की भूमि पर निःशुल्क काम करने के लिए बाध्य नहीं किया गया था। झोपड़ियों में रहने वाले कृषक दासों का जीवन अत्यधिक दयनीय हुआ करता था।

(3) मैनर की शासन व्यवस्था :

(ii) कृषि स्वरूप और सामन्तवाद से उसके सम्बन्ध :

सामन्त अपने अधिपतियों से भूमि का कुछ

हिस्सा लेते थे। वे स्वयं खेती नहीं करते थे। वरन किसानों से खेती करवाते थे।

(2) युद्ध और वीरता :-

सामन्ती युग में मनुष्य घोड़े पर चढ़कर युद्ध लड़ता था। मनुष्य और घोड़े दोनों एक ही प्रकार का कवच पहनते थे। योद्धाओं के पास भारी भारी ढालें, बर्छियां, लम्बी तलवारें और लड़ने के लिए कुल्हाड़ियां होती थी।

Q.11. धर्म सुधार आन्दोलन की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans:- पूर्व मध्यकाल में यूरोपीय समाज में चर्च का महत्वपूर्ण स्थान था। चर्च ईसाई धर्म के परम्परागत विश्वासों तथा नैतिकता का प्रतीक था। जन्म से लेकर मृत्यु तक चर्च मनुष्य का न केवल स्वामी था, अपितु संरक्षक एवं पथ-प्रदर्शक भी था। चर्च ने बर्बरता का अन्त करने तथा शान्ति एवं व्यवस्था बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। धर्म, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे सामाजिक कार्य चर्च द्वारा ही किए जाते थे। इस प्रकार चर्च मानवता का मित्र था।

धर्म सुधार आन्दोलन का अर्थ :—

यूरोप की जनता ने चर्च में व्याप्त बुराइयों तथा धर्माधिकारियों की धार्मिक बुराइयों को दूर करने के लिए जो आन्दोलन चलाया वह यूरोप के इतिहास में धर्म सुधार के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य :—

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(1) चर्च की बुराइयों एवं धर्माधिकारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करना।

(2) पोप के असीमित अधिकारों पर नियन्त्रण लगाना।

(3) धर्माधिकारियों का ध्यान आध्यात्मिकता की तरफ लगाना।

धर्म सुधार के कारण :—

पुनर्जागरण की तरह धर्म सुधार आन्दोलन भी एक आकस्मिक घटना नहीं कही जा सकती यूरोप की बदलती परिस्थितियों के साथ इसके कारण भी बनते रहे और 16 वीं सदी के प्रारम्भ होते ही वे अपना प्रभाव दिखाने लगे।

(1) पुनर्जागरण का प्रभाव :—

पुनर्जागरण व धर्म सुधार आन्दोलन को एक-दूसरे का पूरक

माना जाता है।

(2) वैज्ञानिक तथा भौगोलिक खोजें :— पुनर्जागरण काल में अनेक वैज्ञानिक तथा भौगोलिक खोजें हुईं जिनके परिणाम स्वरूप मध्ययुगीन अन्धविश्वासों तथा रूढ़ी धारणाओं का अन्त हुआ।

3.) चर्च का संगठन दोष :— 15 वीं शताब्दी के अन्त तक रोमन कैथोलिक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे।

(b) पुनर्जागरण के परिणामों की समीक्षा कीजिए।

Ans :— पुनर्जागरण विश्व इतिहास की एक युगान्तकारी घटना है इसके परिणाम बहुत ही महत्वपूर्ण तथा दूरगामी रहे हैं।

(1) वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा विचार स्वतन्त्रता :— पुनर्जागरण ने लोगों को विचार स्वतन्त्रता प्रदान करके उनके तर्कशील एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बनाया।

(2) मानवादी दृष्टिकोण का विकास :— तर्क एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के द्वारा मनुष्य ने प्रकृति के रहस्यों को समझा।

(3) राष्ट्रीयता का विकास :—

पुनर्जागरण के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति का जो सिलसिला आरम्भ हुआ, उसने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

(4) धर्म सुधार :—

पुनर्जागरण के कारण जो बौद्धिक विकास हुआ, उसका प्रभाव धार्मिक क्षेत्र पर भी पड़ा।

(5) शिक्षा में सुधार :—

पुनर्जागरण आन्दोलन के फलस्वरूप शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।

6. पुरातात्विक ज्ञान का विकास :—

पुनर्जागरण से पहले लोगों की पुरातत्व के ज्ञान में कोई रूचि नहीं थी परन्तु इस काल के साहित्यकारों तथा कलाकारों ने प्राचीन रोमन तथा यूनानी सभ्यताओं का गुणगान किया तथा उससे प्रेरणा ली।

7) स्त्रियों की स्थिति में सुधार :—

मध्य युग में स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक नहीं थी।

8) अर्थव्यवस्था में परिवर्तन :—

पुनर्जागर के कारण सामन्तवाद का पतन हुआ।

Page :
Date :

10. औद्योगिक क्रान्ति की पृष्ठभूमि का निर्माण :— पुनर्जागरण ने अनेक भौगोलिक एवं वैज्ञानिक अनुसंधानो को बढ़ावा दिया।

Scanned with OKEN Scanner